www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुसंस्कारों की प्रतिक्रिया- कष्ट तनाव एवं विक्षोभ !

श्री राम शर्मा आचार्य

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

DEV SANSKRITI VISWAVIDHYALAYA
HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्रमांक-२४२

*

लेखक

श्रीराम शर्मा आचार्य

*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक एवं मुद्रक

युग निर्माण योजना,

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

*

१९८२

*

मूल्य-

पच्चीस पैसा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुसंस्कारों की प्रतिक्रिया- कष्ट, तनाव एवं विक्षोभ

जैसे-जैसे हम स्थूल से सूक्ष्म में प्रवेश करते हुए आगे बढ़ रहे हैं, वैसे-वैसे हमें सङ्कटों और अभावों के वास्तविक कारणों को समझने में सुविधा मिल रही है। मोटी बुद्धि सदा सङ्कटों का कारण बाहर ढूँढ़ती है। व्यक्तियों, परिस्थितियों पर ही प्रस्तुत विपन्नताओं का दोष थोपकर चित्त हलका करने की विडम्बना चलती रहती है। समझदारी बढ़ने पर ही यह पता चलता है कि घटिया व्यक्तित्व ही पिछड़ेपन से लेकर समस्त सङ्कटों के घाट हैं। मनःस्थिति के अनुरूप परिस्थिति बनती है, उसे विचारशील ही

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वीकार करते हैं। अन्यथा आमतौर से कठिनाइयों के कारण बाहर ही ढूंढ़े जाते हैं। गहराई में प्रवेश किये बिना तो वास्तविकता जानी जा सकती है और न उनके निवारण का कारगर उपाय ही बन पड़ता है। व्यक्तित्व का घटियापन सूझ ही न पड़े—उनके सुधार की कोई योजना बने ही नहीं तो परिस्थितियों की विपन्नता का समाधान हो ही नहीं सकता। वे एक से दूसरा रूप भर बदलती रहेंगी।

बहुत समय पहले शारीरिक रोगों को बाहरी भूत-पलीतों का आक्रमण माना जाता था। पीछे वात, पित्त, कफ ऋतु प्रभाव का कारण उन्हें माना गया। उसके बाद रोग कीटाणुओं के आक्रमण की बात समझी गई। रोगों की शोधों में अगला चरण यह बना कि आहार की विकृति से पेट में सड़न पैदा होती है और उस विष से रोग उत्पन्न होते हैं। यह क्रम अधिकाधिक गहराई में प्रवेश करने का—अधिक बुद्धिमत्ता का—स्थूल से सूक्ष्म में उतरने का है। इस प्रगतिक्रम में उतरते-उतरते इन दिनों आरोग्य शास्त्र के मूर्धन्य क्षेत में इस तथ्य को खोज

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निकाला गया है कि शारीरिक रोगों के सन्दर्भ में आहार-विहार, विषाणु, आक्रमण आदि को तो बहुत ही स्वल्प मात्रा में दोषी ठहराया जा सकता है। रुग्णता का असली कारण व्यक्ति की मनःस्थिति है। मनोविकारों की विषाक्तता यदि मस्तिष्क पर छाई रहे तो उसका अनुपयुक्त प्रभाव नाड़ी संस्थान के माध्यम से समूचे शरीर पर पड़ेगा। फलतः दुर्बलता और रुग्णता का कुचक्र बढ़ते-बढ़ते अकाल मृत्यु तक का सङ्कट खड़ा कर देगा। नये अनुसंधान जीवनी शक्ति का केन्द्र हृदय को नहीं मस्तिष्क को मानते हैं। रक्त की न्यूनाधिकता या विषाक्तता को रुग्णता का उतना बड़ा कारण नहीं माना जाता जितना कि मानसिक अवसाद एवं आवेश को।

इन शोध प्रयासों में नये-नये तथ्य सामने आये हैं। उनसे पता चलता है कि शरीर की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष क्रियाओं पर पूरी तरह मानसिक अनुशासन ही काम करता है अचेतन मन की छत्र-छाया में रक्ताभिषण, आकुंचन-प्रकुंचन, श्वास-प्रश्वास, निमेष-उन्मेष, ग्रहण विसर्जन, निद्रा जागृति आदि की अनैच्छिक कहलाने वाली क्रियाएँ

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चलती रहती हैं। चेतन मन के द्वारा बुद्धिपूर्वक किये जाने वाले क्रिया-कलापों और लोक व्यवहारों का ताना-बाना बुना जाता है। शरीर की परोक्ष और प्रत्यक्ष क्षमता पूरी तरह अचेतन और चेतन कहे जाने वाले मन-संस्थान के नियंत्रण में रहती है, उसी के आदेशों का पालन करती है। शरीर का पूरा-पूरा आधिपत्य मनमस्तिष्क के ही हाथों में रहता है। उस क्षेत्र की जैसी भी कुछ स्थिति होती है उसका प्रभाव पड़ता है। यदि मस्तिष्क आवेश-ग्रस्त होगा तो शरीर के अवयवों में उत्तेजना और बेचैनी छाई रहेगी।

यह मोटा निष्कर्ष हुआ। बारीकी में उतरने पर पता चलता है कि अमुक शारीरिक रोग, अमुक मनोविकार के फलस्वरूप उत्पन्न होते हैं और वे तब तक बने ही रहते हैं जब तक कि मानसिक स्थिति में कारगर परिवर्तन न हो जाय। इस अनुसंधान ने उस असमंजस को दूर कर दिया है जिसके अनुसार रोगियों को चिकित्सकों के दरबाजे पर ठोकरें खानी पड़ती हैं। नित नई दवायें बदलनी पड़ती हैं। किन्तु आशा-निराशा के झूले में झूलते हुए समय भर

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बीतता रहता है। रोग हटने का नाम ही नहीं लेते। तेज औषधियाँ अधिक से अधिक इतना कर पाती हैं कि बीमारी के स्वरूप और लक्षण में थोड़ा-बहुत फेर-बदल प्रस्तुत कर दें। जीर्ण रोगियों में से अधिकांश का इतिहास यही है। जिससे औषधि उपचार की निरर्थकता ही सिद्ध होती रहती है। आहार-बिहार जन्य साधारण रोग तो शरीर का निरोधक जीवनी शक्ति ही अच्छे करती रहती है। उसी का श्रेय चिकित्सकों को मिल जाता है। सचाई तो यह है कि एक भी छोटे या बड़े रोगों का शर्तिया इलाज अभी तक संसार के किसी भी कोने में किसी भी चिकित्सक के हाथ नहीं लगा है। कोई भी औषधि अपने आप्तवासन को पूरा कर सकने में सफल नहीं हुई है। अँधेरे में ढेले फेंकने जैसे प्रयास ही चिकित्सा क्षेत्र में चलते रहते हैं, उसी मगदड़ में कभी कभी किसी अन्धे के हाथ बटेर लग जाती है यदि ऐसा न होता तो कम से कम चिकित्सों को खुद तो रुग्ण रहना ही न पड़ता और उनके घर वाले सम्बन्धी तो बीमारियों से ग्रसित नहीं ही रहते। देखा यह गया है कि दवाओं की भरमार बीमारियों को

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

घटाती नहीं वरन् उस नई विषाक्तता के शरीर में घुस पड़ने से नये-नये उपद्रव और खड़े होते हैं। सच तो यह है कि चिकित्सकों के शरणागत रहने वालों की अपेक्षा वे कहीं अधिक नफे में रहते हैं जिन्हें चिकित्सा का सौभाग्य या अभिशाप प्राप्त कर सकने का अवसर ही नहीं मिल सका।

शरीर शास्त्री अब इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि आरोग्य और रुग्णता की कुञ्जी मनःक्षेत्र में सुरक्षित है। मानसिक असन्तुलन और प्रदूषण का निराकरण किये बिना किसी को भी स्वस्थ शरीर का आनन्द नहीं मिल सकता। जीवनी शक्ति का पिछले दिनों बहुत गुणगान होता रहा है। उसे प्राप्त करने के लिए आकाश पाताल के कुलावे भी मिलाये जाते रहे हैं। टानिकों, हारमोन और ग्रन्थि आरोपणों जैसे प्रयोग परीक्षणों की भरमार रही है। किन्तु गरीबों की बात तो दूर कोट्याधीश, शासनाध्यक्ष एवं स्वयं-चिकित्सकों तक को उस प्रयास में कुछ पल्ले न पड़ा। अब यह निर्णय निकला है कि जीवनी शक्ति कोई शरीर गत स्वतन्त्रत क्षमता नहीं है परन्तु जिजीविषा की

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मानसिक प्रखरता ही अपना परिचय जीवनी शक्ति के रूप में देती रहती है। मानसिक स्थिति के उतार-चढ़ावों के अनुरूप यह जीवनी शक्ति भी घटती बढ़ती रह सकती है। शरीर की बलिष्ठता, सक्रियता, स्फूर्ति ही नहीं कोमलता, सुन्दरता और कान्ति तक मानसिक स्थिति पर अवलम्बित है। विपन्नता की मनःस्थिति में भय, शोक, क्रोध आदि के अवसर आने पर तो तत्काल आकृति से लेकर शरीर की सामान्य स्थिति पर बुरा प्रभाव पड़ते प्रत्यक्ष देखा जाता है। यदि मनोविकार जड़ जमा लें तो समझना चाहिए कि शरीर एक प्रकार से विपन्नता में फँस ही गया और उस दलदल से निकल सकना चिकित्सा उपचार के बलबूते की बात भी नहीं रह गई है।

अब आरोग्य दशा और रोग निवृत्ति की दोनों ही आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मनःसंस्थान की खोज बीन करना आवश्यक हो गया है और समझा जाने लगा है कि यदि मनुष्य के चिन्तन क्षेत्र में घुसी हुई विकृतियों की ओर ध्यान नहीं दिया गया। जहाँ जमी हुई वितृष्णाओं और विपन्नताओं का समाधान न किया गया तो आहार-

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विहार का सन्तुलन बनाये रहने पर भी रुग्णता से पीछा छूट नहीं सकेगा। चिकित्सा उपचार से भी मन बहलाने के अतिरिक्त और कुछ प्रयोजन सिद्ध हो नहीं सकेगा। अब क्रमशः औषधि उपचार का महत्व घटता जा रहा है और मानसोपचार को प्रमुखता दी जा रही है। मानसिक बीमारियों की पिछले दिनों अलग से गणना होती रही है और उनका क्षेत्र अलग रहा है। अब नये शोध प्रयोजनों ने कुछ दुर्घटना जैसे आकस्मिक कारणों से उत्पन्न होने वाले रोगों को ही शारीरिक माना है और लगभग समस्त बीमारियों को मनःक्षेत्र की प्रतिक्रिया घोषित किया है। गहरी खोजों के फलस्वरूप आरोग्य जैसे मानवी-जीवन के अति महत्वपूर्ण प्रयोजन पर नये सिरे से विचार करना होगा और आहार-बिहार के ही गीत न गाते रहकर यह देखना होगा कि मनस्विता बनाये रहने के लिए क्या कुछ किया जा सकता है ?

मानसिक विकृतियों में से सामयिक उलझनों के कारण तो बहुत थोड़े से ही होते हैं। अधिकतर उनका कारण नैतिक होता है। छल-दुराव एवं ढोंग-पाखण्ड के

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कारण मनुष्य के भीतर दो व्यक्तित्व उत्पन्न हो जाते हैं। एक वास्तविक दूसरा पाखण्डी। दोनों के बीच भयङ्कर अन्तर्द्वन्द्व खड़ा रहता है। दोनों एक दूसरे के साथ शत्रुता बनाये रहते हैं और विरोधी को कुचल कर अपना वर्चस्व बनाने का प्रयत्न करते हैं। यह देवासुर संग्राम सारे मनःक्षेत्र को अशान्त उद्विग्न बनाये रहता है। इस विग्रह के फलस्वरूप अनेकों रोग उठ खड़े होते हैं और वे वैसे ही मानसिक स्थिति बने रहने तक हटने का नाम नहीं लेते।

शारीरिक रोग प्रत्यक्ष होते हैं। इसलिए उनकी जानकारी भी सहज ही मिल जाती है और दवा-दारू से इनका इलाज होने के भी साधन मौजूद रहते हैं। मानसिक रोगों के प्रायः विक्षिप्त अवसर के ऐसे लोग गिने जाते हैं जो अपना सामन्य काम चला सकने में असमर्थ हो गये हों, जिनका शरीर निर्वाह और लोक व्यवहार लड़खड़ाने और अटपटाने लगा हो जो अपने लिए और साथी सम्बन्धियों के लिए भार बन गये हों। ऐसे रोगियों की संख्या भी

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लाखों से आगे बढ़कर करोड़ों में अपने ही देश में छूने लगी है। ऐसे लोगों की संख्या का कोई ठिकाना नहीं जो रोजी-रोटी तो कमा लेते हैं और जागते सोते समय भी साधारण लगते हैं, पर उनका चिन्तन विचित्र और विलक्षण होता है। कितने ही दुष्टता की भाषा में सोचते और हर किसी पर दोषारोपण करते हुए शत्रुता की परिधि में लपेटते हैं। कितने ही आशङ्काओं, सन्देहों, आक्षेपों के इतने अभ्यस्त होते हैं कि उन्हें अपनी पत्नी, बेटी, बहिन आदि तक के चरित्र पर अकारण सन्देह बना रहता है। सम्बन्धियों और पड़ोसियों को अपने विरुद्ध कुचक्र रचते हुए देखते हैं। दुर्भाग्य और ग्रह नक्षत्रों के प्रकोप से कितने ही हर घड़ी काँपते रहते है और विपत्ति का पहाड़ अपने ऊपर टूटता ही अनुभव करते हैं। शेखचिल्लियों के से मनसुये बाँधते रहने वाले, सम्भव-असम्भव का विचार किये बिना अपने सपनों की एक अनोखी दुनिया बनाये बैठे रहते हैं। न अपनी पटरी दुसरों के साथ बिठा पाते हैं न किसी और को अपना घनिष्ठ बनने का अवसर देते हैं। परिस्थिति का

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मूल्यांकन कर सकना दूसरों की मनःस्थिति और परिस्थिति समझ सकना उनके लिए सम्भव ही नहीं होता। अटपटे अनुमान लगाते और बेतुके निष्कर्षों पर पहुँचते हैं। विचार जो भी उठें वे एकपक्षीय सनक की तरह बिना तर्क-वितर्क का आश्रय लिए बेलगाम के घोड़े पर चढ़कर दौड़ते चले जाते हैं। जो सोचा जा रहा है उसका आधार क्या है—और उस सनक पर चढ़े रहने का अन्ततः परिणाम क्या निकलेगा इतना समझ पाना उनके क्षत विक्षत मस्तिष्क के लिए सम्भव ही न होगा। अकारण मुंह लटकाये बैठे रहने वाले, जिस-तिस पर दोषारोपण करने वाले—दुर्भाग्य की कुरूप तस्वीरें गढ़ने में उन्हें देर नहीं लगती। दुनिया को निस्सार बताने वाले आत्महत्या की बात सोचते रहने वालों की संख्या अपने ही इर्द-गिर्द ढेरों मिल सकती है। हँसी-खुशी से उनका सम्बन्ध कोई नहीं होता। कहीं न कहीं से मुसीबत की कल्पना ढूंढ़ लाते हैं और स्वयं दुःख पाते—साथियों को दुःख देते—जिन्दगी की लाश ढोते रहते हैं। यह सनक कभी कभी आक्रामक हो उठती है तो जो भी उसकी चपेट में आता है उसे

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सताने में कसर नहीं छोड़ते। मित्र को शत्रु और शत्रु को मित्र समझने में उनकी अदूरदर्शिता पग-पग पर झलकती रहती है। ठगों के आये दिन शिकार होते रहते हैं। आयु बड़ी हो जाने पर भी सोचने का तरीका बालकों जैसा ही बना रहता है। किसी महत्वपूर्ण प्रसङ्ग में उनका परामर्श तनिक भी काम का सिद्ध नहीं होता। उनकी कार्यपद्धति को किसी उद्देश्य के साथ जोड़ सकना उनसे बन नहीं पड़ता। जैसे-तैसे समय गुजारते हुए— त्यों-त्यों करके ही मौत के दिन पूरा कर लेते हैं। इन्हें पागल तो नहीं कह सकते, पर व्यक्तित्व की परख की दृष्टि से उससे कुछ अच्छी स्थिति में भी उन्हें नहीं समझा जा सकता।

दुष्कर्मों के संग्रहीत प्रतिफल को प्रारब्ध एवं भाग्य विधान को सुधारने और सरल बनाने के लिए भारतीय धर्मशास्त्रों मे एकमात्र विधान प्रायश्चित का ही है। प्रायश्चित का एक सुविस्तृत तत्वज्ञान और सुनिश्चित विधि-विधान है। यों सस्तेपन की बचकानी घुसपैठ ने इस क्षेत्र

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को भी अछूता नहीं छोड़ा है और प्राचीन विधि-विधानों की ओछी और बचकानी नकलें बनाकर उस महान् प्रयोजन को भी उपहासास्पद ही बना दिया गया है। वस्तुतः प्रायश्चित विधान का अर्जन किये गये पाप कर्मों के फल-स्वरूप मिलने वाले दण्ड के समतुल्य हो जा पहुंचता है। अन्तर थोड़ा-सा ही रह जाता है। किसी की चोरी करने पर पुलिस और अदालत द्वारा कठोर जेल-दण्ड भुगतना पड़ता है या अपनी भूल स्वयं समझकर जिसकी चोरी की है उसके सामने दुःखी होते और जितना सम्भव है उतना लौटा देने से अपेक्षाकृत कम कष्ट सहने में काम चल जाता है। यही बात प्रायश्चित के सम्बन्ध में भी है। भूल स्वीकार करने—किये का पश्चात्ताप करने और भविष्य में वैसा न करने की भावभरी मनःस्थिति में अपराधी मनोवृत्ति परिवर्तन का चिह्न है। यह चिह्न ही पाप दण्ड को हलका करने का प्रधान आधार होता है। उसके उपरान्त क्षतिपूर्ति का प्रश्न सामने आता है। जो हानि पहुंचाई गई है। अनाचरण से अन्तःकरण को कलुषित और वातावरण को दूषित करने का सदाचार बन पड़ा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है। उसकी क्षतिपूर्ति दो प्रकार से हो सकती है एक तो अनाचार का जितना गहरा गड्ढा खोदा गया है उसे पाटा जाय अर्थात् क्षति पूर्ति कर सकना वर्तमान परिस्थितियों में जितना कुछ सम्भव रह गया है उसे पूरा किया जाय उसके अतिरिक्त अन्तःकरण पर उन कुकर्मों के कुसंस्कार जमे हों उन्हें कुछ नये पुण्य कर्म करके कुसंस्कारों की नई स्थापना की जाय। जिनका श्रेष्ठ प्रभाव नये सिरे से अन्तःकरण पर जमे और मलीनता की संचित परतों को हटा सकने के समर्थ बन सके। इसी नीति को अपनाने में समाज को पहुँचाई गई क्षति पूर्ति भी सम्भव हो सकती है।

इस जन्म के विदित और स्मृत पापों से लेकर जन्म-जन्मान्तरों तक के पापों का निराकरण आवश्यक है। उन्हें निकालना और निरस्त करना आवश्यक है। विष खाने की गलती का परिमार्जन इसी प्रकार हो सकता है कि पेट और आँतों की धुलाई करके वमन विरेचन आदि द्वारा उसे जल्दी से जल्दी निकाल बाहर किया जाय।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्राण संकट उसी उपाय से टल सकता है। प्रायश्चित ही परिशोधन का एकमात्र उपाय है। नदी, तालाबों में स्नान कर सकने से—देव मन्दिरों का दर्शन करने से या छुट-पुट से ही अन्य ऐसे ही उपचार कर लेने से पाप नष्ट हो जायेंगे ऐसा सोचना भूल है। यदि ऐसे ही दुष्कर्मों के दण्ड से छुटकारा मिल जाया करेगा तो फिर निर्भय होकर लोग वैसे ही कुकृत्य करते रहेंगे और दण्ड से बच निकलने के लिए ऐसे ही सस्ते तरीके ढूँढ़ लिया करेंगे। राजदण्ड से बचने के लिए रिश्वत का पहले ही बोलबाला है। लोकसेवी और धर्मात्मा का आडम्बर रचकर उसकी आड़ में समाज दण्ड से भी बचाव हो जाता है। ईश्वरीय दण्ड ही एकमात्र पाप से डरने का कारण रह गया है। उसी अंकुश से नीति-निष्ठा बनी रहने की सम्भावना है यदि उसे भी सस्ते कर्मकाण्डों के सहारे झुठला दिया गया तो समझना चाहिए कि उस आधार पर भरपेट पाप करते रहने और सरलतापूर्वक ईश्वरीय दण्ड से बच निकलने का एक और नया भ्रष्टाचार खड़ा हो गया। शारीरिक और मानसिक दुष्प्रवृत्तियों के परिमार्जन का एक-

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मात्र उपाय प्रायश्चित्त ही है। उसमें दण्ड भुगतने— क्षति पूर्ति करने और भविष्य में वैसी गलती न करने के तीनों ही वे तत्व घुले हुए हैं जिनके सहारे भूल सुधारने और अन्धकार को प्रकाश में बदलने का अवसर मिलता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मुद्रक-युगनिर्माण प्रेस, गायत्री तपोभूमि, मथुरा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चिकित्सा एवं मनः शास्त्र के नवीनतम निष्कर्ष हैं कि आरोग्य एवं रुग्णता की कुंजी मनः क्षेत्र में सुरक्षित है मानसिक असन्तुलन एवं विकारों का निराकरण किये बिना शरीर को निरोग एवं स्वस्थ्य रख सकना सम्भव नहीं है ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

युग निर्माण योजना

गायत्री तपोभूमि -मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org